विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

जीवनोपयोगी मसालों में मिलावट: सेहत और स्वाद से खिलवाड़

मसालों का हमारी रसोई में महत्वपूर्ण स्थान है। मसाले खाने को जायकेदार बना देते हैं। इनके बिना स्वाद का मजा नहीं लिया जा सकता। यह स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत फायदेमंद होते है। मसालों का उपयोग केवल खानपान तक सीमित नहीं है अपितु यह हमारे स्वास्थ्य, रोजगार और अर्थव्यवस्था के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। विशेषकर हमारे देश भारत में ये अपने अनूठे स्वाद के साथ औषधीय गुणों के कारण पसंद किए जाते हैं। मसालों की खेती से जहां किसानों को आय मिलती है वहीं देश को विदेशी मुद्रा का अर्जन भी होता है। इसलिए मसालों का उत्पादन और उपयोग दोनों ही हमारे लिए बहुत लाभकारी हैं।

आज खाने-पीने की चीजों में हो रही मिलावट से मसाले भी अछूते नहीं रहे हैं। मसालों में मिलावट का मामला बढ़ता जा रहा है। मिलावटखोर घटिया मसाले बेचकर मुनाफा कमाते हैं, जिससे कैंसर, पेट दर्द और अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ता है। सब्जियों को स्वादिष्ट बनाने के लिए ब्रांडेड से लेकर खुदरा बिकने वाले मसाले में धड़ल्ले से मिलावट का खेल चल रहा है। आम आदमी महंगाई के साथ खाद्य पदार्थों में हो रही मिलावट खोरी से खासा परेशान रहता है। हमारे बीच यह धारणा पुख्ता बनती जा रही है कि बाजार में मिलने वाली हर चीज में कुछ न कुछ मिलावट जरूर है। लोगों की यह चिंता बेबुनियाद नहीं है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। खाने-पीने के पदार्थों में मिलावट कोई नयी समस्या नहीं है। मिलावट और खराब उत्पाद बेचे जाने की खबरें आम हो चुकी हैं। साल-दर-साल इसका दायरा व्यापक होता जा रहा है। मसालों में मिलावट की खबर से हर देशवासी हैरान और परेशान है। सबसे ज्यादा मिलावट मसालों में हो रही है। एक मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि हल्दी और लाल मिर्च पाउडर के अंदर कई केमिकल की मिलावट हो सकती है।

विशेषज्ञ चिकित्सकों के मुताबिक मिलावटी मसाले पूरे शरीर में जहर घोल रहे हैं। कोई भी खाद्य पदार्थ खून से होते हुए अलग अलग जगह पोषण देता है। ये मसाले लिवर और किडनी को खराब कर सकते हैं और कैंसर का खतरा बढ़ाते हैं। डॉक्टर के अनुसार भारत में बहुत सारे मसाले मिलावटी होते हैं। कहना है कि कुटे हुए मसालों में आर्टिफिशियल कलर, स्टार्च, चॉक पाउडर और अन्य चीजों की मिलावट हो सकती है। इनका सेवन करने से स्किन एलर्जी, लिवर डिसऑर्डर और कई स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए भारत में खुले कूटे हुए मसालों की बिक्री बैन है। मगर फिर भी गली-मोहल्ले और दुकानों पर इन्हें धड़ल्ले से बेचा जा रहा है। काली मिर्च में पपीते का बीज, लाल मिर्च में रंग वाला पाउडर और ईंट पीस कर मिला देते हैं। धनिया पाउडर में तरह-तरह की मिलावट करते हैं। हल्दी में पीला रंग मिला देते हैं और जीरा में झाड़ू वाला जीरा मिला देते हैं। गलियों में फेरी लगाने वाले सस्ता और मिलावटी मसाला सरेआम बेच रहे है। सस्ते के धोखे में हमारी रसोई में मिलावटी मसाले पहुंचते देर नहीं लगती। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक काली मिर्च में पपीते के बीजों को सुखाकर मिलाया जाता है। अगर इसकी जांच आप आसानी से कर सकते हैं। काली मिर्च को कूट लें, अगर हाथ में तेल नजर आता है तो यह असली है। इसी भांति दालचीनी के नाम पर चाइनीज कासिया बेचा जाता है। दालचीनी की खुशबू काफी तेज होती है। दालचीनी पाउडर पर आयोडीन की बूंदे डाले अगर वह पाउडर नीला हो जाए तो वह मिलावटी है। हल्दी में मिलावट की जाती है तो कहीं लाल मिर्च और काली मिर्च मिलावटी बेची जाती है। इसी तरह मिलावटी जीरा भी बाजार में धड़ल्ले से बिक रहा है। जीरा की मिलावट जानने के लिए हथेली पर किए जाने वाले टेस्ट के बारे में बताया है। इस टेस्ट को करने के लिए जीरा को हथेली पर रखकर मलें। अगर हथेली पर कालिख नजर आने लगे या फिर भूसा छूटकर हथेली पर चिपक जाए तो यह जीरा मिलावटी है। अगर जीरा को रगड़ने पर हथेली एकदम साफ नजर आए तो इसका मतलब है कि जीरा में किसी तरह की मिलावट नहीं की गई है।

आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। संपूर्ण देश में मिलावटी खाद्य-पदार्थों की भरमार हो गई है। सच तो यह है अधिक मुनाफा कमाने के लालच में नामी कंपनियों से लेकर खोमचे वालों तक ने उपभोक्ताओं के हितों को ताख पर रख दिया है। अगर कोई इन्हें खाकर बीमार पड़ जाता है तो हालत और भी खराब है, क्योंकि जीवनरक्षक दवाइयाँ भी नकली ही बिक रही हैं।

मिलावट का अर्थ है महँगी चीजों में सस्ती चीज का मिलावट। मुनाफाखोरी करने वाले लोग रातोंरात धनवान बनने का सपना देखते हैं। अपना यह सपना साकार करने के लिए वे बिना सोचे-समझे मिलावट का सहारा लेते हैं। सस्ती चीजों का मिश्रण कर सामान को मिलावटी कर महंगे दामों में बेचकर लोगों को न केवल धोखा दिया जाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ भी किया जाता है। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से प्रतिवर्ष हजारों लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर जीवन से हाथ धो बैठते हैं। मिलावट का धंधा हर तरफ देखने को मिल रहा है। दूध बेचने और मिलावट करने वाले से लेकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक ने मिलावट के बाजार पर अपना कब्जा कर लिया है।

आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। संपूर्ण देश में मिलावटी खाद्य-पदार्थों की भरमार हो गई है। आजकल नकली दूध, नकली घी, नकली तेल, नकली चायपत्ती आदि सब कुछ धड़ल्ले से बिक रहा है। सच तो यह है अधिक मुनाफा कमाने के लालच में नामी कंपनियों से लेकर खोमचे वालों तक ने उपभोक्ताओं के हितों को ताख पर रख दिया है। अगर कोई इन्हें खाकर बीमार पड़ जाता है तो हालत और भी खराब है, क्योंकि जीवनरक्षक दवाइयाँ भी नकली ही बिक रही हैं।

सामान्य तौर पर एक परिवार अपनी आमदनी का लगभग 60 फीसदी भाग खाद्य पदार्थों पर खर्च करता है। खाद्य अपमिश्रण से अंधापन, लकवा तथा टयूमर जैसी खतरनाक बीमारियाँ हो सकती हैं। सामान्यत रोजमर्रा जिन्दगी में उपभोग करने वाले खाद्य पदार्थों जैसे दूध, छाछ, शहद, हल्दी, मिर्च, पाउडर, धनिया, घीं, खाद्य तेल, चाय-कॉफी, मसाले, मावा, आटा आदि में मिलावट की सम्भावना अधिक है। मिलावट एक संगीन अपराध है। मिलावट पर काबू नहीं पाया गया तो यह ऐसा रोग बनता जा रहा कि समाज को ही निगल जाएगा। मिलावट के आतंक को रोकने के लिए सरकार को जन भागीदारी से सख्त कदम उठाने होंगे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 27 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 12:34 तक, साध्ये योग प्रात: 9:25 तक, गर करण दिन 12:23 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा रात्रि 11:04 से आरम्भ होगी। आज प्रदोष व्रत है। आज वारुणी पर्व सूर्योदय से सूर्यास्त तक है। आज मास शिवरात्रि पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: सूर्योदय से 8:23 तक, चर 11:14 से 12:40 तक, लाभ-अमृत 12:40 से 3:31 तक, शुभ 4:57 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:27, सूर्यास्त 6:38

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। आज परिवार में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृश्चिक
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

राजस्थान दिवस : ''ईं रो इतिहास मंड्योड़ो रेतां में, ईं रो भविष्य रचोड्यो हेतां में''

राजेन्द्र मोहन शर्मा

राजस्थान के वैभवशाली अतीत, बेहतर वर्तमान और उन्नत भविष्य का आइना है राजस्थान दिवस । राजस्थान के युवा ऊर्जावान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने इसे राजस्थान उत्सव में ढाल कर स्मृतियों को संजोने और भविष्य को संवारने का बेहतरीन काम किया है। यूं तो राजस्थान का नाम ही पर्याप्त है सूर वीरों की अन्तहीन गाथाओं के लिए की गूंज सुनने के लिए लेकिन विकट भौगोलिक परिस्थितियों से जूझकर रजवाड़ों की राजशाही से मुक्ति पा कर पानी की बूंद-बूंद को तरसे यहां के वाशिंदे आज हरियल्लो राजस्थान का जश्न मना रहे हैं तो यह हैरतअंगेज कारनामा ही कहा जाएगा। यहां रेत के धोरे सोने की तरह चमकते हैं, उन्हीं रेतीले टीलों का सीना चीरती राजस्थान नहर अपने साथ पानी ही खुशहाली और हरियाली साथ लेकर आई। राज्य की पूर्ववर्ती सरकारों से लेकर भजनलाल सरकार तक ने विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य तथा रोजगार का जो काम किया है वह है राज्य की निरन्तरता का प्रतीक।

स्वतंत्रता के साथ 15 अगस्त 1947 को जब देश आगे बढ़ा तब देश में अलग-अलग राज्यों के गठन का काम आरम्भ हुआ। मध्य पश्चिमी हिन्दुस्तान में कई राजाओं की रियासतें थी। इन्ही रियासतों का एकीकरण करके आरम्भ में वृहत राजस्थान संघ की स्थापना की गई, जिसे आरम्भ में राजपुताना के नाम से भी जाना जाता था। राजस्थान का एकीकरण सात चरणों में पूरा हुआ और 30 मार्च 1949 को अंतिम रूप दिया गया था। अन्य राज्यों की तरह ही राजस्थान के एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। बस तभी से हर वर्ष 30 मार्च को राजस्थान का स्थापना दिवस मनाया जाता है। आज 30 मार्च 2025 को को यह सुखद संयोग बना है जब चैत्र मास की प्रतिपदा पर नवसंवत्सर के अवसर जब बासंन्ती नवरात्र स्थापना के साथ राजस्थान भी अपनी 76 वीं सालगिरह मना रहा है जो गणगौर, ईद और चेटीचंड जैसे मनोहारी त्यौहारों से भी गुंथा हुआ है।।इस पावन मौके पर राजस्थान के सभी नागरिकों को बहुत बहुत हार्दिक बधाई।

राजस्थान के नामकरण के पीछे एक दिलचस्प कहानी है। आजादी से पहले यहां अलग-अलग रियासतें थी, जिनमें अलग-अलग शासक थे। राजपरिवारों की अपनी परम्पराएं थी और उनका शासन वंशानुगत चल रहा था। आजादी के बाद जब देश में लोकतांत्रिक शासन लागू हुआ तो राजाओं का शासन चला गया और शासन जनता के जरिए तय होने लगा। चूंकि यह स्थान पहले राजाओं का स्थान रहा था बस इसी कारण इस 'राज' का विस्तार कर इस प्रदेश का नाम राजस्थान रख कर रजवाड़ों में राज्य में विलयीकरण हेतु एकता स्थापित की गई।

राजस्थान अपने अनोखे किलों और महलों, बावड़ियों और हवेलियों के कारण विशेष प्रसिद्धि है। राजाओं ने अपने राज्य की सुरक्षा और अपने वैभव को जताने की प्रबल इच्छा के कारण राजस्थान में कई किले बनाए। इनमें किलों की संख्या लगभग 30 हैं जिनमें जयपुर का आमेर और जयगढ़ किला, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला, राजसमंद का कुम्भलगढ़ किला, सवाई माधोपुर का रणथम्भोर किला, बीकानेर का जूनागढ़ किला, भरतपुर का लोहागढ़ किला विश्वभर में अपनी विशेष पहचान रखते हैं। अन्य किलों और महलों में गागरौन किला, जैसलमेर, सिरोही का अचलगढ़, नागौर का अहिछत्रगढ़, जालौर दुर्ग, सिरोही का खिमसर किला, अवलर का निमराणा, सवाईमाधोपुर का किला, सिटी पैलेस आदि भी प्रसिद्ध हैं।इन अभेद्य किलों के साथ रानियों के रहने के लिए आलीशान महल भी बने हुए हैं। ये किले राजस्थान की धरोहर तो हैं ही साथ ही पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केन्द्र और पर्यटन के माध्यम से आय का स्त्रोत है। आज देश का लगभग दस प्रतिशत भूभाग राजस्थान में है। इसी आधार पर भूभाग की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3 लाख 42 हजार 239 वर्ग किलोमीटर में फैला है तथा लगभग एक हजार किलोमीटर का इलाका पाकिस्तान से सटा है।

राजस्थान की अपनी आन, बान और शान रही है। अपनी शौर्य गाथाओं के कारण राजस्थान देश में अपनी विशेष पहचान रखता है। महाराणा प्रताप महाराणा सांगा, चंद्र सेन राव और महाराजा सूरजमल सहित सैंकड़ों ऐसे राजा रहे हैं जिनकी शौर्य गाथाएं विश्वभर में प्रसिद्ध है। इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान को यूरोप के थर्मापोली की संज्ञा दी थी। जैसे थर्मापोली में पग पग पर वीरता की कहानियां हैं रची हैं उसी तरह राजस्थान में बहुत वीर यौद्धा हुए हैं, यहां पग-पग पर रणबांकुरे अपनी जान हथेली पर रखकर दुश्मन को खेत किये रहते थे जिनके कारण ही इसे थर्मापोली कहा जाता है। राजस्थान का बड़ा भू-भाग रेगिस्तान है। यहां भारत की सबसे पुरानी पर्वतमाला अरावली है।

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान दुनिया में अपनी विशेष पहचान रखता है। यहां दर्जनों ऐसे पर्यटन स्थल है, जहां रोजाना हजारों की संख्या में देशी विदेशी पर्यटक भ्रमण के लिए आते हैं। साथ ही धोरों की धरती जैसलमेर की भी अपनी विशेष पहचान है, जहां हिचकौले खाते पर्यटक ऊंटों की सवारी का आनन्द लेते देखे जा सकते हैं। झीलों की नगरी उदयपुर हो या पिंक सिटी जयपुर, पर्यटन की दृष्टि से यहां कई दर्शनीय स्थान हैं। कल के विराट इतिहास से अधिक जरूरी है आज के राजस्थान पर चर्चा। विश्व प्रसिद्ध काले बेलिया नृत्य की अपेक्षा आज के युवाओं के रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल और बिजली जैसे मुद्दों पर चर्चा करने की। रोजगार निश्चय ही विकट समस्या है लेकिन जब हम देश के दूसरे हिस्सों पर नजर डालते हैं तो खुद को थोड़ा बेहतर पाते हैं बस लेकिन इस पर संतोष व्यक्त नही कर सकते। पिछले कुछ वर्षों में भर्तियों में जैसे घोटाले हुए वे निराशाजनक थे। मौजूदा भजनलाल सरकार ने उनसे सबक लेकर अब तक अच्छे से काम किया है भर्ती प्रक्रिया के प्रति अब जाकर थोड़ा सा विश्वास जागा है जनमानस में उम्मीद है राज्य सरकार आगे बढ़ कर स्वर्णिम इतिहास रचेगी। पीने के पानी की समस्या गर्मी के तेवरों के आगे हर बार विकराल हो जाती है इससे निजात पाने का संकल्प मूर्त होना चाहिए। ठामीण क्षेत्रों में पलायन रोकने के लिए निकटवर्ती क्षेत्रों में ने शहरों का नक्शा साकार होना चाहिए। विज्ञान शिक्षा पर तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत है। सरकारी स्कूल कालेजों को शनै शनै सरकारी पंजे से मुक्त कर स्वतन्त्र सोच वाले संस्थान बनाने की जरूरत है। साथ ही राजस्थान को हिलमिल कर सद्भाव और साहचर्य के नए मार्ग प्रशस्त करनै की जरूरत है।

इस मौके पर मुझे वरिष्ठ साहित्यकार वेदव्यास की यह कविता याद आ रही है –

अमन और चैन की धरती,
विजय-बलिदान की धरती, ये राजस्थान है।
यहां हर द्वार पर श्रम का सवेरा
मुस्कराता है।
नये निर्माण का सपना सृजन के गीत गाता है।।
यहां हर जिंदगी में जागरण का भोर आया है।
नये विश्वास ने सहकार से जीना सिखाया है।। ये राजस्थान है।
यहां हर खेत और खलिहान नवयुग की कहानी है।
चढ़ाने के लिए निज रक्त आतुर हर जवानी है।।
यहां कल कारखानों में अतुल फौलाद ढलता है।
नये मरूदेश में विश्वास का सूरज निकलता है।। ये राजस्थान है।
यहां गांधी-जवाहर ने नई मंजिल बताई है।
हमारी चेतना सद्भाव के पुष्कर नहाई है।।
यहां इंसान में इंसानियत का पुण्य पलता है।
नये अभियान का जय गीत कंठों में मचलता है।।
समय सम्मान की धरती नई पहचान की धरती। ये राजस्थान है।

और मैं इस लेख का अन्त वरिष्ठ कवि दार्शनिक मित्र कृष्ण कल्पित की कविता से कर रहा हूं –

अब भी चलती हैं धूल भरी आँधियाँ।
दृश्य को अस्त-व्यस्त करती जगह बदलती है रेत।।
अब भी टहलती है भेड़ सबसे ऊँचे धोरे पर।
हिलती है उसकी पूँछ चाँद को छूती हुई।।
तपते सूरज को अपने वक्ष पर झेलती है।
एक औरत– यह रेगिस्तान अब भी एक औरत की तरह प्यार करने के क़ाबिल है।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यकार, शिक्षाविद् और चिन्तक

राजस्थान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समग्र विकास के सशक्त केंद्र बन रहे हैं ''पीएमश्री विद्यालय''

जयपुर। नई शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत विकसित विद्यालय, जहां नवाचार, तकनीक और संस्कार के साथ उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलती है, वह है पीएमश्री विद्यालय। भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल के रूप में पीएमश्री विद्यालय (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) योजना की शुरुआत की गई है। इस योजना के अंतर्गत देशभर में ऐसे उत्कृष्ट विद्यालय विकसित किए जा रहे हैं, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकरणीय विद्यालय के रूप में विकसित केंद्र बनें।

राजस्थान में भी पीएमश्री विद्यालय योजना शिक्षा के क्षेत्र में नया अध्याय जोड़ रही है। पीएम श्री स्कूल में 21वीं सदी के कौशल को विकसित करने पर जोर दिया जाता है, जिसमें संवैधानिक मूल्य, भारत का ज्ञान आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, डिजिटल साक्षरता और प्रभावी संचार जैसे कौशल शामिल हैं, ताकि छात्र आधुनिक दुनिया के लिए तैयार हो सकें। साथ ही पीएम श्री स्कूलों में, शिक्षा को बेहतर बनाने और बच्चों के लिए एक समावेशी वातावरण बनाने के लिए, आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। ग्रीन स्कूल अवधारणा को यथार्थ रूप देने के लिए सौलर पैनल, किचन गार्डन स्थापित किए जा रहे हैं। विद्यार्थियों व शिक्षकों में नवाचार, विचार व उद्यिमता को बढ़ाने के लिए वर्कशॉप, बूट कैम्प आदि का आयोजन किया जाता है। प्रधानाचार्य व शिक्षकों को राष्ट्रीय स्तर के तकनीकी संस्थानों में प्रशिक्षित किया जाता है।

पढ़ाई-लिखाई तक सीमित नहीं हैं पीएमश्री विद्यालय : पीएमश्री विद्यालय केवल पढ़ाई-लिखाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यहां विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और संस्कारों की भी शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञों द्वारा परामर्श प्रदान किया जाता है। पढ़ाई के साथ-साथ आधुनिक तकनीक, सांस्कृतिक धरोहर, वैभवशाली इतिहास की जानकारी एक्सपोजर विजिट के माध्यम से रोचक तरीके से प्रदान की जाती है। प्रदेश के ग्रामीण और शहरी

अनुपमा जोरवाल

क्षेत्रों में चयनित विद्यालयों को अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कर अनुकरणीय विद्यालय के रूप में विकसित किया जा रहा है। ये विद्यालय स्मार्ट क्लासरूम, आईसीटी लैब्स, अटल लैब्स, अत्याधुनिक विज्ञान और गणित प्रयोगशालाएं, समृद्ध पुस्तकालय, खेलकूद के मैदान और डिजिटल लर्निंग जैसे संसाधनों से परिपूर्ण हैं ताकि ग्रामीण और दूरस्थ अंचलों के बच्चों को भी उत्कृष्ट और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ हो सके। राजस्थान में भी पीएमश्री विद्यालय योजना शिक्षा के क्षेत्र में नया अध्याय जोड़ रही है। इसका उद्देश्य ऐसे विद्यार्थी तैयार करना है, जो कि 21 वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार रहे तथा प्रत्येक विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाए।

पीएम श्री स्कूलों का चयन ''चैलेंज मोड'' के माध्यम से होता है :-राजकीय विद्यालयों की भौतिक अवसंरचना, नामांकन, पृथक-पृथक शौचालय, स्टॉफ की उपलब्धता आदि कुछ न्यूनतम अर्हताओं वाले विद्यालयों का यूडाइस डेटा के आधार पर विद्यालयों का चयन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बैंचमार्क विद्यालय के रूप में किया जाता है। बैंचमार्क विद्यालयों द्वारा पीएमश्री पोर्टल पर योजना में चयन हेतु आवेदन किए जाते हैं। पीएम श्री स्कूलों का चयन ''चैलेंज मोड'' या पारदर्शी चुनौतीपूर्ण पद्धित के माध्यम से होता है। शहरी क्षेत्र के 70 प्रतिशत व ग्रामीण क्षेत्र में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त विद्यालयों का जिला नोडल अधिकारी द्वारा सत्यापन उपरांत राज्य स्तर पर अनुमोदन पश्चात् अंतिम चयन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया जाता है।

प्रदेश में फिलहाल 639 पीएमश्री विद्यालय :-वर्तमान में राज्य में 639 पीएमश्री विद्यालय संचालित हैं। पीएमश्री योजना में आवेदन की अंतिम तिथि को फिलहाल बढ़ाकर 27 मार्च कर दिया गया है। चयन के लिए राज्य के पात्र बेंचमार्क विद्यालयों द्वारा ऑनलाइन आवेदन किया जा रहा है। जिला नोडल अधिकारी द्वारा सत्यापन करने की अंतिम तिथि 28 मार्च है। अंतिम चयन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाएगा।

अनुपमा जोरवाल, राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, का कहना है कि पीएमश्री योजना में चयन के लिए प्रदेश के बैंचमार्क विद्यालयों द्वारा पीएमश्री पोर्टल पर आवेदन किया जा रहा है। आवेदन उपरांत जिला नोडल अधिकारी द्वारा सत्यापन एवं तत्पश्चात राज्य स्तर पर सत्यापन किया जाएगा। अंतिम चयन शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा किया जाना है। पीएमश्री योजना में आवेदन की अंतिम तिथि 27 मार्च है।

प्रागपुरा में मिल्क पाउडर व वनस्पति तेल से बनाया जा रहा मावा पकड़ा

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम ने करीब 715 किलो मावा नष्ट करवाया

पावटा, (निसं)। खाद्य पदार्थों में मिलावट थमने का नाम नहीं ले रही है। बेखौफ होकर मिलावटखोर सेहत से खिलवाड़ कर रहे हैं। मिलावट रोकने के लिए सिंजारे व गणगौर पर्व को देखते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कोटपुतली बहरोड़ डॉ. आशीष सिंह शेखावत के निर्देशानुसार खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम ने बुधवार सुबह प्रागपुरा कस्बे के ढाणी बड़ीयाला की में हिमांशु मावा एंड मिष्ठान भंडार व ग्राम मंढा में उनके कारखाने पर बड़ी कार्रवाई की, जहां मिल्क पाउडर व वनस्पति तेल से मावा बनाया जा रहा था। मौके पर ही खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने मिलावटी मावा मौके पर ही नष्ट करवाया।

सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह ने बताया कि मिलावटी मावा, दूध, वनस्पति का एक-एक नमूना लिया है। अग्रिम आदेश तक मावा बनाने पर पाबंदी लगाई गई है। जानकारी के अनुसार शाम चार बजे प्रशासन के आदेशों पर पुलिस ने सील सहित ताले को तोड़कर गेट खुलवाया, जहां निरीक्षण के दौरान प्रागपुरा कस्बे के ढाणी बड़ीयाली में हिमांशु मावा एंड मिष्ठान भंडार के मालिक दाताराम सैनी

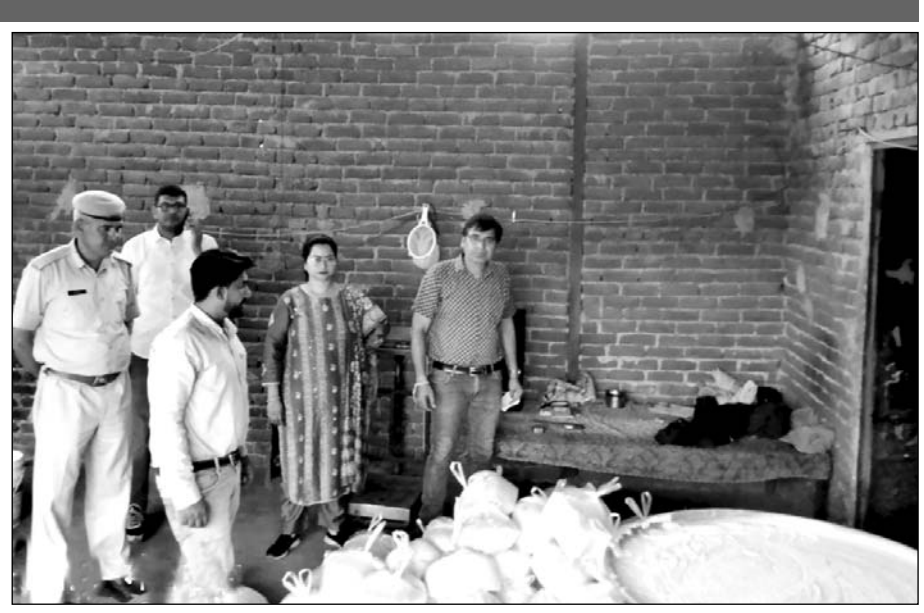

खाद्य सुरक्षा टीम ने कार्यवाही कर मिल्क पाउडर व वनस्पति तेल से बना मावा पकड़ा।

के 175 किलो स्कीम्ड मिल्क पाउडर, 30 खाली पीपे वनस्पति के, तीन कैनों में करीब 35 किलो वनस्पति, 40 किलो मावा ज्यो कि मिलावटी दूध से तैयार किया हुआ।

वहीं ग्राम मंढा स्थित फैक्ट्री पर मिलावटी दूध से तैयार किया हुआ कोल्ड स्टोरेज में 20- 20 किलो के पैकेट व एक थाल में करीब 70 किलो व एक थाल में 5 किलो मावा मावा टोटल करीब 675 किलो मावा मिला, जिसे मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कोटपुतली-बहरोड़ डॉ. आशीष सिंह शेखावत, बीसीएमएचओ कृष्ण सिंह, प्रागपुरा थाना पुलिस, खाद्य सुरक्षा अधिकारी शशिकांत शर्मा, नेहा शर्मा की मौजूदगी में नष्ट करवाया गया।

भामाशाह राकेश पूनिया ने भूमि दान की

सादुलपुर, (निसं)। राजस्थान सेवानिवृत पुलिस कल्याण संस्थान राजगढ़ को भवन निर्माण के लिए भामाशाह राकेश पूनियां ने बालाजी कॉलोनी राजगढ़ में 754 वर्ग गज जमीन दान की है।

भूमि दान करने पर भामाशाह राकेश पूनियां का आभार जताया है। संस्थान के अध्यक्ष मांगेराम पुलिस उप निरीक्षक ने बताया कि राजस्थान सेवानिवृत पुलिस कल्याण संस्थान राजगढ़ का रजिस्ट्रेशन वर्ष 1997-98 में किया हुआ है तथा इसी के आधार पर संपूर्ण सेवानिवृत पुलिस कर्मचारियों व अधिकारियों ने जिला स्तर पर संगठन गठित करने की प्रक्रिया करते हुए समस्त राजस्थान में जिलावार संगठन का विस्तार करने हेतु जिला की जिम्मेदारी जिला अध्यक्षों को दी गई। संगठन को सक्रिय बनाने के लिए तहसील वार भी शाखाएं गठित की गई। इस संगठन के संपूर्ण राज्य के संरक्षक सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक जसवंत संपतराम है तथा प्रदेश महासचिव सुखदेव ब्यास है। इसी क्रम में शाखा तहसील राजगढ़ जिला चूरू में जिला अध्यक्ष चूरु द्वारा मांगेराम जांगिड़ पुलिस उप निरीक्षक को नियुक्त किया। जिसके द्वारा दिनांक 22 मार्च 2022 को संगठन का गठन कर तहसील उपखंड शाखा राजगढ की समय-समय पर प्राइवेट भवन में मीटिंग की जाती रही है।